राष्ट्रीय विकास के लिए युवा सेवा

लॉरिंडा कीज़ लौंग

बच्चों के शिक्षण-प्रशिक्षण से लेकर सार्वजनिक पार्कों में गश्त लगाने और किसी आपदा के बाद स्कूलों एवं भवनों का पुनर्निर्माण करने जैसे सेवा कार्यक्रमों के जरिए युवा नागरिकों को समाज के लिए कुछ करने तथा नए हुनर सीखने का मौका मिलता है, किसी काम को सफलतापूर्वक करने की संतुष्टि मिलती है।

आप एक ऐसे मुल्क में हैं, जहां करोड़ों युवा बसते हैं। इनमें से कई बेरोज़गार हैं, तो कई कोई छोटा-मोटा काम-धंधा कर रहे हैं। ये सब पैसा कमाने की ख्वाहिश रखते हैं, ताकि ये जी सकें, अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी को चला सकें और भविष्य को बेहतर बना सकें। ऐसे लोगों से आप यह उम्मीद कैसे रख सकती हैं कि वे समाजसेवा के कार्यों में रुचि लेंगे?

यह उन कई मुश्किल सवालों में से एक है, जिनका सामना शिक्षाविद सूसन स्ट्रॉड को भारत में करना पड़ा। उन्होंने अमेरिका में राष्ट्रीय युवा सेवा संगठन अमेरिकॉर की स्थापना की है।

सूसन का मकसद युवाओं की ऊर्जा का इस्तेमाल एक रणनाति के तहत राष्ट्रीय विकास, लोकतंत्र को बढ़ावा देने और बेरोज़गारी की समस्या से निपटने के लिए करना है। लेकिन क्या विकासशील देशों के युवा मुफ़्त में यह काम करना चाहेंगे? क्या ये लोग अपनी पढ़ाई या कॅरिअर को दरकिनार कर न्यूनतम वेतन पर ऐसी किसी मुहिम से जुड़ेंगे? प्रोत्साहन क्या है?

इसके जवाब में सुश्री स्ट्रॉड कहती हैं, ''मैं सोचती हूं कि ऐसे कुछ तरीके हैं, जिनसे भारत जैसे बेरोज़गारी से जूझ रहे देशों में भी युवाओं की सेवाएं ली जा सकती हैं।'' वह पिछले साल नवंबर में दिल्ली में हुए स्वयंसेवी प्रयासों के अंतरराष्ट्रीय संगठन के सम्मेलन में मानद अतिथि थीं। वह कहती हैं, ''युवाओं के लिए रोज़गार प्राप्ति में उनके पास नौकरी का कोई पूर्व अनुभव न होना एक सबसे बड़ी बाधा होता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमने कई साल पहले दक्षिण अफ्रीका में ऐसे बेरोज़गार युवाओं के लिए कुछ कार्यक्रम शुरू किए जो राजनीतिक संघर्षों में सक्रिय रहे थे। ये युवा स्कूलों से बाहर हो चुके थे और रोज़गार के मौके भी गंवा चुके थे। हमने इनके लिए कुछ कार्यक्रम तैयार किए। मिसाल के तौर पर हमने इन्हें अश्वेतों के इलाकों में कम कीमत के मकान बनाने के काम से जोड़ा। वहां इन्होंने भवन निर्माण के गुर सीखे और जाना कि एक टीम के रूप में कैसे काम किया जाता है। इस तरह ये लोग एक हुनर में माहिर हुए और रोज़गार पाने के दावेदार बने।''

नौकरियों से जुड़े बहुत से प्रशिक्षण कार्यक्रम अमूमन किसी खास कौशल के विकास पर केंद्रित होते हैं, लेकिन सेवा संबंधी कार्यक्रम इनसे कुछ बढ़कर होते हैं। इनमें शामिल लोग, ज़्यादा उपयोगी और पहल करने वाले नागरिक होते हैं। स्ट्रॉड के मुताबिक, इनकी यह खासियत इनमें समाज के प्रति एक ज़िम्मेदारी और प्रतिबद्धता का अहसास भरती है। युवाओं के लिए चलाए जाने वाले सेवा संबंधी कार्यक्रमों के जरिए उन्हें उपयोगी परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है और इसके एवज में कुछ पैसा भी दिया जा सकता है।

वह कहती हैं, ''जरा 1930 के दशक के मंदी के दौर के अपने देश को याद कीजिए। राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने संरक्षण कार्यक्रम चलाए। उन्होंने देश के युवाओं को, खासकर बेरोज़गारों को कई तरह के कामों से जोड़ दिया। इसका इन युवाओं और पूरे देश को ज़बर्दस्त फ़ायदा हुआ।'' स्ट्रॉड बताती हैं, ''इन युवाओं को उनके काम के बदले में पैसा दिया जाता था, जिसका एक हिस्सा उन्हें अपने परिवारों को देना होता था। अगर आप अमेरिका के किसी राष्ट्रीय उद्यान में जाएंगे तो आपको पता चलेगा कि इन लोगों ने कितनी समृद्ध विरासत का निर्माण किया था। इन युवाओं ने अमेरिका के ज़्यादातर राष्ट्रीय उद्यानों का सृजन किया और वहां लाखों पेड़ लगाए।''

अमेरिका में ऐसे ही प्रयासों की सबसे ताज़ा मिसाल है 'अमेरिकॉर'। इसके ज़रिए हर साल 75 हज़ार युवाओं को रोज़गार दिया जाता है और इनमें से ज़्यादातर बीस से तीस की आयुवर्ग के होते हैं। कई तो बस अभी हाईस्कूल से निकले ही होते हैं, तो कई स्कूल छोड़ चुके होते हैं और कई पी.एचडी. भी होते हैं। सूसन बताती हैं कि आइडिया यह होता है कि ''लोग छात्रवृत्ति पाते हैं, जो न्यूनतम वेतन से कम होती है। इसके बदले ये युवा देश के सबसे विपन्न इलाकों में एक या दो साल तक कई तरह के काम करते हैं।''

स्ट्रॉड स्पष्ट करती हैं, ''इसमें दो

सूसन स्ट्रॉड जीवनपर्यंत शिक्षा क्षेत्र से जुड़ी रहीं। उन्होंने 1994 में अमेरिका में 'अमेरिकॉर नेशनल यूथ सर्विस ऑर्गनाइज़ेशन' का गठन किया था। यह संगठन अब तक हर वर्ग के पांच लाख अमेरिकी युवाओं को देश के सबसे गरीब इलाकों में दो साल के लिए मामूली वेतन पर काम करने के लिए प्रेरित कर चुका है। उन्होंने फ़ोर्ड फ़ाउंडेशन की वित्तीय मदद से *इन्नोवेशन इन सिविक पार्टिसिपेशन* (www.icicp.org) नाम की एक संस्था का भी गठन किया है। यह अंतर्राष्ट्रीय समूहों, सरकारों, स्वयंसेवी संस्थाओं और व्यक्तियों को आंकड़े एवं संसाधन मुहैया कराती है तथा इस बाबत सुझाव देती है कि युवाओं को कैसे सशक्त किया जाए कि वे खुद अपने समाज का निर्माण कर सकें। स्ट्रॉड कहती हैं कि 15 से 24 साल तक के युवाओं की आबादी आज दुनिया में सबसे ज़्यादा है और इनमें 90 फ़ीसदी से ज़्यादा विकासशील देशों में रहते हैं। सुश्री स्ट्रॉड मुंबई में युवाओं से विचारों का आदान-प्रदान करते हुए (नीचे)।

फ़ोटो: तसनीम खालसेकर

युवा हों या बुज़ुर्ग, अमेरिकियों में बढ़ा स्वयंसेवा का रुझान

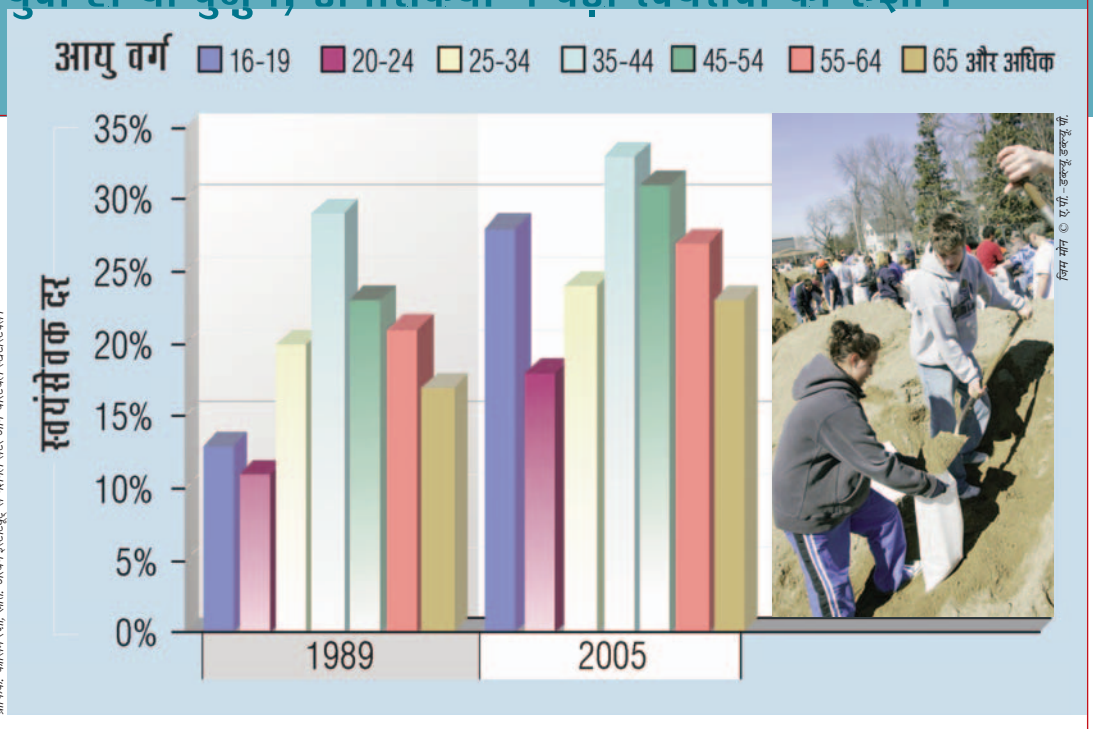

ग्राफिक: कासिम रज़ा, स्रोत: अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ़ फिलैंथ्रॉपी सेंटर ऑफ़ चैरिटेबल स्टैटिस्टिक्स।

टिम मोर © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

राय नहीं कि इस पैसे से ये अमीर नहीं हो सकते, पर इतना ज़रूर है कि इससे इनका खर्चा आराम से चल जाता है। साल के आखिर में इन युवाओं को 4,725 डॉलर का एक वॉउचर दिया जाता है, जिसे ये सिर्फ शिक्षा या प्रशिक्षण की फ़ीस चुकाने या कॉलेज का ऋण अदा करने के लिए ही इस्तेमाल कर सकते हैं।'' इन युवाओं में बहुत से मिसिसिपी और लुइसियाना में राहत का काम कर चुके हैं, जहां तूफान कैटरीना ने भारी तबाही मचाई थी।

स्ट्रॉड का मानना है कि स्वयंसेवी संगठन और व्यक्ति विशेष अपनी ऊर्जा और विचारों से विभिन्न योजनाओं को साकार कर सकते हैं, उन्हें काम करने और उसे फैलाने दीजिए। ''यदि आप वाकई ऐसा कुछ करना चाहते हैं, जिससे ज़्यादा से ज़्यादा युवाओं की ज़िंदगी प्रभावित हो तो इसके लिए आपको ज़्यादा से ज़्यादा जन संसाधनों की व्यवस्था करनी होगी।''

वह कहती हैं, ''भारत में भी युवाओं के लिए कई कार्यक्रम हैं। यहां एनसीसी है और राष्ट्रीय सेवा योजना भी है, जिससे पूरे देश में पांच हज़ार स्वयंसेवक जुड़े हुए हैं। लेकिन वह सवाल करती हैं कि इस योजना से सिर्फ पांच हजार युवा ही क्यों जुड़े हुए हैं, दस लाख क्यों नहीं? क्या इसे समाज की ज़रूरतों और रोज़गार से जोड़ा गया? युवाओं को इससे जोड़ने की मुहिम क्यों नहीं छेड़ी जाती? इस देश में गांधीवादी परम्पराएं हैं, दान और उदारता की भावना है, जिनके दम पर बड़े पैमाने पर सेवा संबंधी कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं।''

स्ट्रॉड को उम्मीद है कि वर्ष 2008 में दक्षिण एशिया में युवाओं को सेवा संबंधी कार्यों से जोड़ने के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इसमें विचार किया जाएगा कि इस मकसद को साकार करने के लिए क्या रणनीति बनाई जाए। इसमें ''स्थानीय परंपराओं को समझते हुए भविष्य की योजना बनाई जाएगी, न कि किसी अमेरिकी मॉडल को थोपने की कोशिश होगी।''

वह बताती हैं कि जब किसी भी पृष्ठभूमि के स्वयंसेवक से पूछा जाता है कि उसने अपने अनुभव से क्या सीखा, तो दिलचस्प रूप से अक्सर सबका जवाब एक सा ही होता है। अमेरिकॉर के स्वयंसेवक बनने के पीछे जो भी मकसद या प्रेरणा रही हो, उनका कहना होता है कि उन्हें अपने काम को सफलतापूर्वक कर पाने का संतोष होता है। उन्हें लगता है कि वे कुछ कर पाने में कामयाब हुए। यह कार्यक्रम कई पहलुओं को अपने में समेटे हुए है। इसे सिर्फ अमीर या गरीब बच्चों को ध्यान में रखकर नहीं बनाया गया है। अमेरिकॉर के बहुत से सदस्यों के मुताबिक, इस कार्यक्रम का सबसे अच्छा पहलू यह है कि ''उन्हें इसके ज़रिए भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि और माहौल से आए लोगों से मिलने तथा उनके साथ काम करने का मौका मिलता है। ऐसा मौका शायद उन्हें अपने प्रयासों से भी अन्यत्र न मिलता।'' स्ट्रॉड कहती हैं, ''इस लिहाज से इस तरह के कार्यक्रम समाज के मतभेदों और वर्ग, नस्ल तथा शिक्षा से जुड़े भेदभावों को कम करने का मौका मुहैया कराते हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि युवाओं से जुड़े सेवा संबंधी कार्यक्रम लोकतंत्र और एक अच्छे समाज के निर्माण में मददगार साबित हो सकते हैं।''

सुश्री स्ट्रॉड का मानना है, ''जब युवा अपने काम पर नज़र डालते हैं, अपने काम में आए बदलाव के बारे में सोचते हैं तो उन्हें एक अलग तरह का अहसास होता है। वे जान पाते हैं कि वे क्या कर सकते हैं और उनकी क्षमताएं क्या हैं।'' स्ट्रॉड के अनुसार ''वे कह सकते हैं कि ये सारे पेड़ हमने लगाए, हमने इस छोटी-सी नदी को साफ किया। ऐसे कुछ युवाओं के लिए, जिनसे कभी कोई ज़िम्मेदारी लेने को नहीं कहा गया, जिनके बारे में कभी यह नहीं सोचा गया कि वे किसी ज़िम्मेदारी के काबिल हैं, उनके लिए यह बड़े बदलाव वाला शक्तिशाली अनुभव हो सकता है।''

रोमेलिया मोलिस © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

यूनिवर्सिटी ऑफ़ इलिनोइ और यूनिवर्सिटी ऑफ़ सदर्न मिसिसिपी के विद्यार्थी जैक्सन, मिसिसिपी में हैबिटेट फ़ॉर ह्यूमैनिटी आवास परियोजना की इमारत पर रंग-रोगन करते हुए।

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजें।